जंगलराज से

मंगलराज की ओर

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्।।

जंगलराज से मंगलराज की ओर

एक घने जंगल में पीपल का था वृक्ष उदार।
रहता था जिसके कोटर में एक गिद्ध परिवार।।
गिद्ध सो रहा था मनमौजी खर्राटा भर-भर कर।
भूख लगी उसके बच्चों को रोने लगे बिलखकर।।
नींद खुल गयी गिद्धराज की वह थोड़ा गुर्राया।
बोला तुमने शोर मचाकर क्योंकर मुझे जगाया।।
बच्चे बोले पापा-पापा भूख लगी है हमको।
बुरा हाल हो रहा हमारा अतः जगाया तुमको।।

ठहरो! बोला गिद्ध अभी मैं जंगल को जाता हूँ।
थोड़ा धीरज रखो अभी मैं भोजन ले आता हूँ।।
उड़ा गिद्ध नभ में उसने निज गिद्धदृष्टि दौड़ाई।
एक लोमड़ी का बच्चा झुरमुट में पड़ा दिखाई।।
फिर क्या था उस गिद्धराज ने तुरत झपट्टा मारा।
पकड़ लिया उसने पंजे में लोमड़ का शिशु प्यारा।।
घबराया लोमड़ का बच्चा उसने शोर मचाया।
लोमड़ पीछे भागा लेकिन जोर नहीं चल पाया।।
गिद्ध उड़ गया ऊपर लोमड़ पीछे-पीछे भागा।
बार-बार वरदान दया का गिद्धराज से माँगा।।
निष्ठुर क्रूर कठोर गीध ने लेकिन बात न मानी।
'जिसकी लाठी भैंस उसी की' जंगल की गति जानी।।
अरे गीध! तुम मानव होते तब कुछ बात समझते।
अन्यायी बनकर मेरे बच्चे पर नहीं झपटते।।
किन्तु पाशविक वृत्ति तुम्हारी यह अपराध कराती।
'मात्स्य-न्याय' के पथ पर तुमको यह पशुबुद्धि चलाती।।
गिद्धराज बोला मुझको तू देता न्याय दुहाई।
जंगल का कानून तुझे कुछ देता नहीं दिखाई।।
गिद्धराज ने निर्दयता से लोमड़ शिशु को मारा।
क्रूर चोंच से नोंच-नोंच कर खाया सबने चारा।।
लोमड़ शिशु को मार गीध ने निज शिशुओं को पाला।
निज शिशु की पीड़ा से लोमड़ में जागी इक ज्वाला।।
उस लोमड़ ने चीख-चीखकर शिशु को मरते देखा।
ठन लिया निज मन में उसने लूंगा इसका लेखा।।
भोज गिद्ध परिवार कर चुका उसने ली अँगड़ाई।
पेट भर गया बड़े चैन की नींद सभी को आई।।
इधर लोमड़ी ने जंगल में दूरदृष्टि दौड़ाई।
वन में जलती आग दूर पर उसको पड़ी दिखाई।।
दौड़-दौड़कर उसने सूखी लकड़ी ढेर लगाई।
जलती लकड़ी लेकर आया बात समझ में आई।।
पीपल के नीचे सूखी लकड़ी में आग लगाई।
धू-धू करके आग जल उठी अक्ल काम में आई।।
बूढ़े पीपल की शाखाएँ राख हो गयीं सारी।
गिद्ध निकल भागा कोटर से किन्तु मरे परिवारी।।
अपनी आँखों से अपना संसार उजड़ते देखा।
बेबस अपने बच्चों को जल-जलकर मरते देखा।।

गिद्धराज बोला जंगल में अब आतंक मचा है।
नहीं सुरक्षित जीवन जंगल में अब शेष बचा है।।
घूम रहे दिन-रात खुले आतंकवाद के साये।
अक्ल ठिकाने आती है जब निज पर विपदा आये।।
दौड़ा वह वनराज सिंह के न्यायालय में आया।
उस पर जो गुजरी थी उसने सारा हाल सुनाया।।
फरियादी की बात सुनी आर्डर-आर्डर चिल्लाया।
वनविधान को भंग देखकर सिंह बहुत गुर्राया।।
बोला मित्र हमारे हैं जो उनको अभी बुलाओ।
गिद्ध बाज भेड़ियों सियारों कुत्तों जल्दी आओ।।
साँपों को भी साथ लिये आना जो पेटपुजारी।
सबकुछ भी खा करके जिनको आती नहीं डकारी।।
पूरी देह पेट है जिनका अजगर सेठ भयंकर।
खड़ा निगल जाते जीवों को जीवित अपने अन्दर।।
मगरमच्छ घड़ियाल सभी को राजसभा में लाओ।
चादुकार मंत्री सियार तुम सब प्रबन्ध करवाओ।।
यह विपत्ति की घड़ी राष्ट्र पर खतरा मँडराया है।
लोमड़ खरगोशों हिरनों ने हिंसा अपनाया है।।
छाया है आतंक राष्ट्र में जीवन हुआ अरक्षित।
शाकाहारी मांसाहारी होगा राष्ट्र विखण्डित।।
अन्न और जल पर जो आश्रित उनने करी बगावत।
माँस-खून खाना पीना अब होगी बड़ी मुसीबत।।
एक गिद्ध के साथ आज यह जो अन्याय हुआ है।
लोमड़ के आतंकवाद का ही सब ओर धुँआ है।।
एक लोमड़ी की हरकत पर हम तो यही कहेंगे।
कल को हंस कबूतर बुलबुल तोते यही करेंगे।।
खरगोशों बन्दरों गाय भैंसों में बात उठेगी।
उनमें भी बदले की चर्चा निश्चय आज चलेगी।।
राजपुरोहित कुछ इमाम पादरी और कुछ लामा।
अरे! सियारों रँगकर खुद को करो जल्द हंगामा।।
प्रवचन करो रेडियो टीवी पर सबको समझाओ।
बदले की भावना त्यागकर सभी एक हो जाओ।।
राष्ट्र एकता अखण्डता पर आज आँच है आई।
एक लोमड़ी ने जनता में है अनीति फैलाई।।
आज राज में उथल-पुथल है प्रजा भड़कती जाये।
बदले की भावना कोटरों में भी आग लगाए।।

सिविल लाइनों में अब देखो होता खून-खराबा।
एक गिद्ध के साथ हुआ जो फैला शोर-शराबा।।
न्यायालय में आज अरे! यह नया केस आया है।
लोमड़ जैसे तुच्छ जीव में राजद्रोह छाया है।।
जिनका माँस-खून खा-पीकर हम जीवित रहते थे।
क्रूर तांडव नृत्य हमारा वे अब तक सहते थे।।
आज उन्हीं ने देखो कैसी चाल चली है भाई।
राजकाज पर आज भयंकर देखो विपदा आई।।
हम सिंहों का सिंहासन अब डोल रहा है भाई।
रँगे सियारों अब विपत्ति में तुम ही करो सहाई।।
आज राष्ट्र आतंकवाद की है चपेट में आया।
गिद्धराज परिवार आज तो जीवित गया जलाया।।
हम ऐय्यासों पर संकट का बादल मंडराया है।
जनता ने कानून हाथ में लेकर धमकाया है।।
राम बुद्ध नानक कबीर जीसस की बात बताओ।
रँगे सियारों टीवी पर यह चढ़-चढ़ कर चिल्लाओ।।
कथा भागवत गीता बाइबिल वेद कुरान सुनाओ।
नगर-नगर में गली-गली में जाकर सभा कराओ।।
हरे राम, हरे राम, राम-राम हरे-हरे।
हरे कृष्णा, हरे कृष्णा, कृष्णा-कृष्णा हरे-हरे।।
वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीर पराई जाने रे।
अनुशासन में रहे निरन्तर मन अभिमान न आने रे।।
कहो महापुरुषों के पीछे चले प्रजा यह सारी।
सत्य अहिंसा प्रेमपंथ पर चलें सभी नर नारी।।
गाँधीवादी सद्विचार से जनविद्रोह दबाओ।
रँगे सियारों उठे कि जल्दी अब मत समय गँवाओ।।
प्रजा हमारे अत्याचारों से यदि ऊब चुकी है।
दुःख सहते-सहते जीवन की आशा डूब चुकी है।।
यह संसार दुःखों का घर है उनको यही सिखाओ।
अधिकारों से ध्यान हटाओ कुछ अध्यात्म पढ़ाओ।।
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।
कर्मों पर अधिकार प्रजा को, फल पर है राजा को।
प्रजा कर्मरत रहे निरन्तर तजकर फल आशा को।।
यही मुक्ति उपदेश सियारों सबको रोज पढ़ाओ।
धर्म त्यागकर सबको यह आध्यात्मिक गीत सुनाओ।।

तेरा राम जी करेंगे बेड़ा पार उदासी मन काहे को करे।
डोरी सौंप के तू देख एकबार उदासी मन काहे को करे।।
नैया तेरी राम हवाले लहर-लहर हरि आप सँभाले।
तेरी जीत भी रही है तेरी हार उदासी मन काहे को करे।।
वरना राजद्रोह यह हम पर भारी पड़ जायेगा।
लोमड़ का यह अग्निकाण्ड जनता को भड़काएगा।।
प्रजा भड़क उठने पर तख्तो ताज उलट जायेगा।
सदियों से चल रहा हमारा खेल पलट जायेगा।।
स्वर्णक्षत्र के नीचे हाथी पर चढ़कर चलते थे।
लोकसम्पदा को हम अपने बापू की कहते थे।।
प्रजा क्रोधवश यह सारा कानून हाथ में लेगी।
हमको तब मेहनत करने पर रोटी हाथ लगेगी।।
मांसाहारी मजबूरन सब शाकाहारी होंगे।
सबके बच्चों को अपने ही बच्चों सा समझेंगे।।
कर्म अपहरण छोड़ उपार्जन करना हमें पड़ेगा।
धौंस हमारी कोई भी तब बिल्कुल नहीं सुनेगा।।
हाय अरे! घनघोर आपदा हम पर ऐसी आई।
जन्तर मन्तर तन्तर वालों जल्दी करो सहाई।।
भाँति-भाँति के रँग में रँगकर अपना देश बचाओ।
पंडित पादरियों मुल्लों का जल्दी वेश बनाओ।।
हाथ तुम्हारे लाज राज की स्यारों इसे बचाओ।
भजन कीर्तन कथा कहानी प्रवचन झड़ी लगाओ।।
ईश्वर सत्य, जगत माया है जोर-जोर चिल्लाओ।
धरती पर जो कष्ट सहेगा उसको स्वर्ग बताओ।।
भौतिकवादी संस्कृति के विरुद्ध आवाज उठाओ।
भौतिक सम्पत्ति पर राजाओं का अधिकार बताओ।।
राजद्रोह को करो नियंत्रित मोर्चा तुम्हीं सम्भालो।
लोमड़ आज हुआ आतंकी उसका तोड़ निकालो।।
अस्त्र-शस्त्र से बात नहीं है देखो बनने वाली।
कूटनीति से पंडित मुल्लों तुम्हीं करो रखवाली।।
आज जीव को निज अधिकारों का आभास हुआ है।
जब-जब बुद्धि प्रजा में जागी राज विनाश हुआ है।।
राजनीति के शास्त्र और पूर्वज भी यही कहे हैं।
ज्ञान और शिक्षा से ऊँचे-ऊँचे महल ढहे हैं।।
अन्यायी नियमों पर हमने अब तक राज चलाया।
किन्तु प्रजा को बुद्धि आ गई किसने उन्हें पढ़ाया।।

लोमड़ को किसने यह शिक्षा दी है पता लगाओ।
उस शिक्षक को सुकरातों के जैसा जहर पिलाओ।।
किसने आज प्रजा में बदले का यह भाव जगाया।
एक जीव के राजद्रोह से सिंहासन थर्राया।।
युग-युग से हमने रखी थी प्रजा नियंत्रित सारी।
जंगलराज अखण्ड सुरक्षित रहा आज तक भारी।।
चारों ओर शान्ति थी वन में राजदण्ड भय छाया।
शिक्षा से ही राजद्रोह का है मौसम गरमाया।।
कौन यहाँ चाणक्य कि जिसने चन्द्रगुप्त खोजा है।
इक लोमड़ को शिक्षा देकर उसने क्या सोचा है।।
राजसभा में ही बैठा था एक सियार सयाना।
उसने कहा सुनो राजन् यह तो है धर्म पुराना।।
'ब्रह्मचर्य-आश्रम' में वर्ष पचीस सभी नर-नारी।
ज्ञान और शिक्षा पाने के जन्मसिद्ध अधिकारी।।
हो निशुल्क-अनिवार्य निरन्तर शिक्षा वर्ष पचीसी।
सरकारी दायित्व यही है सब हो प्रजा मनीषी।।
किन्तु नहीं सरकार प्रजा को जो शिक्षा देती है।
वह सम्पूर्ण राष्ट्र को गड्ढे में ढकेल देती है।।
स्पार्टाकस जैसे दासों में भी था यह जागा।
मिश्र देश से यहूदियों को मूसा लेकर भागा।।
तोड़ दासता की जंजीरें आगे बढ़े हजारों।
सावधान हो जाओ फिर से रस्ते की दीवारों।।
संभव है आतंकवादियों में भी यही जगा हो।
संभव है यह राजद्रोह भी इसीलिये भड़का हो।।
परसुराम ने कभी राम ने तोड़ी है यह धारा।
कभी कृष्ण ने इन सिंहों को खींच-खींचकर मारा।।
जब-जब पाप बढ़े धरती पर राजतंत्र गहराये।
तब-तब धरती पर आतंकी देवलोक से आये।।
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे।।
जन्मसिद्ध अधिकारों की जब जनता लड़े लड़ाई।
राजपक्ष आतंकवाद की देता तभी दुहाई।।
आतंकी विद्रोह एक संकेत आज देता है।
ऐसा होता युगप्रवाह जब अँगड़ाई लेता है।।

'अंकुर' जब-जब तुच्छ प्रजा में जाग्रति पड़े दिखाई।
तब जानो कलियुगी राज की होगी जल्द विदाई।।
अब अधर्म अन्याय नहीं ज्यादा दिन चलने वाला।
राजघरानों में अब निश्चित लग जायेगा ताला।।
न्यायधर्म की ज्योति जगेगी सत्युग अब आयेगा।
रावण कंस दुःशासन दुर्योधन का युग जायेगा।।
प्रजा अशिक्षित अनपढ़ अनगढ़ जब तक बनी रहेगी।
तब तक ही सब वनराजों की भृकुटी तनी रहेगी।।
शिक्षित होने पर सबमें अधिकारबुद्धि जागेगी।
समुचित शिक्षा रोजगार सम्मान प्रजा माँगेगी।।
राम कृष्ण बलराम लक्ष्मण आतंकी कहलाए।
परसुराम ने राजद्रोह कर कितने मुकुट गिराए।।
प्राणी कब तक चुप रह करके अत्याचार सहेगा।
सहनशक्ति का बाँध टूटकर निश्चित कभी बहेगा।।
इस प्रवाह में राजनीति के महल डूब जायेंगे।
सेना और कमाण्डो कोई काम नहीं आयेंगे।।
रँगे सियारों से भी कब तक यह पाखण्ड चलेगा।
उसी बाढ़ में उनका भी छलरंग अवश्य धुलेगा।।
आड़ धर्म की लेकर कब तक जंगलराज चलेगा।
रँगे सियारों से यह आगे राज नहीं सँभलेगा।।
बात बहुत गंभीर हो गयी जनविद्रोह जगा है।
गिद्धराज का कुल कुटुम्ब इसमें ही राख हुआ है।।
जंगल की यह आग अरे अब तेजी से फैलेगी।
प्रजा स्वयं आगे बढ़कर कानून हाथ में लेगी।।
सिंह-भेड़ को एक घाट पर पानी पीना होगा।
महाराज अब न्यायपूर्वक सबको जीना होगा।।
नहीं चलेगी अब जंगल में कोई दादागीरी।
ऐय्याशों की नहीं रहेगी अब वैसी जागीरी।।
लूटो खाओ मजे उड़ाओ प्रजा सहे दुःख भारी।
राजागण सीने पर चढ़कर अब तक किए सवारी।।
कब तक वे प्रतिशोध न लेंगे कब तक कष्ट सहेंगे।
कब तक वे चुपचाप रहेंगे कुछ भी नहीं कहेंगे।।
सबको ही अपने शिशुओं की ममता पीर सताए।
राजपक्ष ने चीर-चीरकर उनको अब तक खाए।।
अन्त राक्षसीराज कभी तो यह अवश्य ही होगा।
निर्बल को दुःख देकर तुमने बहुत राजसुख भोगा।।

महाराज यह उचित नहीं है बात हमारी मानो।
राजनीति तजने की अब तो अपने मन में ठानो।।
अन्न शाक फल फूल दूध सबकुछ तो है इस वन में।
हिंसा का साम्राज्य खड़ा क्यों जंगल के जीवन में।।
औरों के बच्चों को हनकर निज बच्चे क्यों पालें?
खाद्य पदार्थ बहुत है उसको हम आहार बना लें।।
बहुत वस्तुएँ हैं जिनको कुछ पीड़ा कष्ट नहीं है।
उनको ही आहार बनायें, राजन्! उचित यही है।।
अन्यों के अधिकार छीनकर अपना पेट भरें क्यों?
समुचित सबके अधिकारों का आखिर हनन करें क्यों??
महाराज! यदि सबको न्यायोचित अधिकार मिलेगा।
नहीं कहीं आतंकवाद में घर परिवार जलेगा।।
हे वनराज सिंह! यह पशुवत जंगलराज हमारा।
फैल गया यदि मनुजलोक में होगा नहीं गुजारा।।
छीन प्रजा के अधिकारों को राजा ऐश करेंगे।
शोषित दलित दमित उत्पीड़ित होकर लोग मरेंगे।।
पिता अगर बच्चों को लूटे रक्षा कौन करेगा।
पति अगर पत्नी को मारे पीड़ा कौन हरेगा।।
राजा अगर प्रजा को चूसे पोषण कौन करेगा।
डसे अगर कानून कोबरा जहर नहीं उतरेगा।।
अरे! मनुष्यों तुम तो जंगलराज नहीं अपनाना।
न्यायधर्म ही राष्ट्रधर्म है यही सभी ने जाना।।
शिक्षा रोजी सुखसुविधा संरक्षण सबके हित हो।
प्रजा रहे खुशहाल कहीं पर क्यों कोई क्रोधित हो।।
धर्म यही कहता है सब हैं एक पिता के वंशज।
एक ब्रह्म से उपजे हैं सब ईश्वर के हैं अंशज।।
अतः परस्पर द्वन्द-भेद का है बर्ताव निरर्थक।
न्यायधर्म ही जनता के हित का है प्रबल समर्थक।।
श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चाप्यवधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।
सुनो धर्म का सार यही है सुन करके अपनाओ।
जो अपने प्रतिकूल जुल्म वह औरों पर मत ढाओ।।
वृद्ध स्यार की बातें सुनकर सिंहराज गुर्राए।
सिंहासन पर खड़े हो गये आँखें लाल दिखाए।।
अरे विभीषण! तेरी तो है बुद्धि आज शठियाई।
मेरे टुकड़ों पर पलकर तू मेरी करे बुराई।।

लगता है आतंकवादियों से तू मिला हुआ है।
तभी तुझे वन के राजा से शिकवा और गिला है।।
तेरी बातों से लगता है मुझे दाल में काला।
अरे! विषधरों इसे पिलाओ भरकर विष का प्याला।।
राजद्रोह का इसी दुष्ट पर पहले केस चलाओ।
जनहित की यह बात कह रहा इसको मजा चखाओ।।
इस बूढ़े सियार की देखो बुद्धि आज सठिआई।
राजदण्ड को भूल अरे! यह करता बड़ी ढिठाई।।
लात मारकर इसे निकालो राजसभा से बाहर।
खुल करके यह राजद्रोह की बातें करे भयंकर।।
इसको भी उस आतंकी लोमड़ की हवा लगी है।
जाने किस सतयुग की संस्कृति इसमें आज जगी है।।
उस बूढ़े सियार ने हँसकर कहा सुनो हे राजन!
मरी हुई थी अक्ल हमारी खाकर तेरा जूठन।।
जो शिकार को मार-मार कर तुम लाया करते थे।
दान-दक्षिणा जूठन-छूटन हम भोगा करते थे।।
किन्तु आज लोमड़ के साहस ने ही मुझे जगाया।
सत्य बात कहने का अवसर आज मुझे है आया।।
तुम चाहो तो बेशक मुझको फाँसी पर लटकाओ।
सुकरातों की भाँति मुझे भी तुम विषपान कराओ।।
मुझे विभीषण कहकर राजसभा से भले निकालो।
किन्तु भलाई है इसमें यह वनविधान तज डालो।।
जिसकी लाठी भैंस उसी की यह अन्याय हटाओ।
जो अपने हित में चाहो वह सबके हित अपनाओ।।
शूर नहीं तुम वीर बनो अब श्रेष्ठ वरीय कहाओ।
गुण आधारित लोकतन्त्र अब धरती पर ले आओ।।
दल बल छल से अरे सिंह जी सिंहासन मत घेरो।
सार्वजनिक धन-सम्पति पर तुम अपना हाथ न फेरो।।
बूढ़ा मंत्री अटल ब्रह्मचारी था कुछ ललकारा।
सिंहासन आरूढ़ जनों को उसने कुछ फटकारा।।
किन्तु अरे चिकने घट पर क्या पानी ठहर सका है।
मटका है वह पड़ा कुएँ में औंधे मुँह लटका है।।
मंत्री वृद्ध सियार न्याय की बात बहुत समझाए।
अंधे सिंहों धृतराष्ट्रों को किन्तु विदुर क्यों भाए।।
इनको तो बस कृष्ण और पांडव ही रोक सकेंगे।
राम और लक्ष्मण ही इनमें खूँटा ठोक सकेंगे।।

परसुराम से इनकी गरदन इक्किस बार कटेगी।
तब ही इनके अहंकार की झूठी अकड़ मिटेगी।।
राजसिंह कब तक निरीह की काया को नोचेंगे।
जब इन पर गुजरेगी निश्चित तब ही ये सोचेंगे।।
सहस्राब्दियों से यह नंगा नाच चल रहा भाई।
रक्षक के पद पर भक्षक ही बैठे सभी कसाई।।
राष्ट्रपिता व राष्ट्रपति ही राष्ट्रप्रजा के नायक।
पोषक ही शोषक बन बैठे हर पद पर नालायक।।
अब नन्हीं सी प्रजा लोमड़ी ने प्रतिकार दिखाया।
सहनशीलता छोड़ अरे उसने विरोध जतलाया।।
आग लगाकर गिद्धराज का कोटर आज जलाया।
न्यायालय में आज न्याय का नया मुकदमा आया।।
पहले तो न्यायालय में पीड़ित आया करते थे।
अधिवक्ता-चूहे कुतर्क कर उसका धन हरते थे।।
बीसों साल मुकदमा चलता धन-दौलत लुट जाती।
किन्तु मुकदमे से छुटकारा प्रजा नहीं कर पाती।।
बाहर अपराधी से पिटता न्यायालय में लुटता।
राजनीति के रजबन्धन में बँध करके दम घुटता।।
न्याय कहाँ मिलता उसकी तो चप्पल तक घिस जाती।
निर्णय होने तक घटना की स्मृति भी मिट जाती।।
किन्तु आज यह केस अजूबा राजसभा में आया।
बड़े-बड़े राजाओं का भी सिंहासन थर्राया।।
उत्पीड़क ही उत्पीड़ित हो करके शोर मचाए।
राजसभा निज सिर खुजलाए गुत्थी सुलझ न पाए।।
उस बूढ़े मंत्री सियार ने सही मंत्रणा दे दी।
किन्तु रावणों के कानों पर जूँ तक नहीं कुरेदी।।
जनसंख्या में प्रजा अधिक है राजवंश हैं थोड़े।
उस बूढ़े सियार ने उठकर नये वाण कुछ छोड़े।।
प्रजा अगर भड़की तो समझो पड़े जान के लाले।
सभी राजभवनों पर 'अंकुर' पड़ जायेंगे ताले।।
अतः समय पर चेतो यदि तुम भला स्वयं का चाहो।
वरना सिंहों वंशनाश के लिये पन्थ अवगाहो।।
सिंहों घड़ियालों गिद्धों है वंशनाश की बारी।
चिड़ियाघर में रहने की करनी होगी तैयारी।।
वंशवृद्धि के लिये वहीं तुम लोग सुरक्षित होगे।
निज हिंसक स्वभाव को तज दो वरना हाथ मलोगे।।

सर्कस में रखे जाओगे तुम पर टिकट लगेगा।
लुप्त प्रजाति देखकर मानव तुम पर बहुत हँसेगा।।
हंटर मार-मार कर मानव साइकिल चलवायेंगे।
पिंजरों में बन्दी रखकर वे तुमको तड़पायेंगे।।
सिंहों गिद्धों घड़ियालों कुछ बुद्धि ठिकाने लाओ।
सिंहासन का लोभ छोड़ मेहनत की रोटी खाओ।।
मांसाहार त्यागकर शाकाहार उचित है भाई।
औरों को पीड़ित करके है मिथ्या पेट भराई।।
कितने डायनासोर दैत्य दानव थे भरकम भारी।
नाश हो गया वंश सभी का जितने मांसाहारी।।
सिंहों गिद्धों घड़ियालों का वंशनाश अब होगा।
लुप्त जातियों के आरक्षित वन में रहना होगा।।
हिंसाप्रेमी जन यदि तुमको रक्षित नहीं करेंगे।
वंश तुम्हारे इस धरती पर कभी नहीं उपजेंगे।।
बात बहुत कड़वी है लेकिन कहनी आज पड़ी है।
हे राजन! सच्चाई कहने की यह उचित घड़ी है।।
महामहिम श्रीमान सिंह जी अब नाखून कटाओ।
पुरुषों के ब्यूटी पार्लर में जाकर दाँत घिसाओ।।
हिंसक नाखूनों-दाँतों का त्याग करो तत्कालू।
चलो चाट के ठेलों पर कुछ खाओ चटपट आलू।।
लाल खून की प्यास छोड़कर पियो दूध की धारा।
जंगल में फल बहुत मिलेंगे बहुत मिलेगा चारा।।
तज करके दुर्जनता यदि तुम सज्जन हो जाओगे।
मानव के घर-घर में तुम भी अपनापन पाओगे।।
बच्चे तुमसे प्यार करेंगे गले लिपटकर सारे।
खाना-पीना मुफ्त मिलेगा घर बैठे ही प्यारे।।
फिर तुम पर गोली बन्दूकें बिलकुल नहीं चलेंगी।
गाय बैल घोड़ों के जैसी इज्जत तुम्हें मिलेगी।।
जिन कुत्तों ने त्याग दिया है हिंसा का आचार।
उन्हें मनुष्यों के घर-घर में मिलता कितना प्यार।।
कारों में बैठाकर उनको मानव सैर कराते।
साबुन से नहलाकर उनको बिस्कुट-दूध खिलाते।।
भारी भरकम हाथी जो है बिल्कुल शाकाहारी।
उसको तो 'गणेश जी' कहकर पूजें बहुत पुजारी।।
हे राजन! श्री सिंहराज जी! बात हमारी मानो।
अनय अनीति त्यागकर तुम भी न्यायनीति पहिचानो।।

शोषक राजनीति को तजकर न्यायनीति अपनाओ।
प्रजारूप सन्तानों को अब और नहीं तड़पाओ।।
चलो गिद्ध को लेकर उस लोमड़ से माफी माँगो।
अहंकार का मुकुट उतारो अब खूँटी पर टाँगो।।
यदि तुम पशु होकर तज दोगे यह हिंसक आचार।
मानव भी लज्जावश तुमसे सीखेंगे व्यवहार।।
सिंहों को आदर्श मानकर मनुज हुए अन्यायी।
सिंहासन पर बैठ 'सिंह की पदवी' उनने पायी।।
शेरछाप साम्राज्य युगों से देखो चलता आया।
बड़े-बड़े शूरों अन्धों ने अपना शौर्य दिखाया।।
पशु होकर भी आप अगर यह सत्पथ अपना लेंगे।
निश्चय ही मानव भी अपना कुछ स्वभाव बदलेंगे।।
मानव भी तब किया करेंगे न्यायशील सत्शासन।
संतानों की भाँति प्रजा का तब होगा परिपालन।।
शेर नहीं तब वर बन करके पद का वरण करेंगे।
शूर नहीं तब वीर बनेंगे सबका शोक हरेंगे।।
शौर्य नहीं तब वीर्य मनुज में प्रखर दिखाई देगा।
सिंहासन तज न्यायासन पर दुःखी दुहाई देगा।।
सिंहों को आदर्श मानकर मानव दैत्य हुए हैं।
कंस और रावण बनकर जनता का रक्त पिए हैं।।
सिंहों तुम ही मानव बनकर शुभ सत्गुण अपनाओ।
भटके मानव को तुम ही कुछ सत्पथ पुनः सुझाओ।।
शिक्षा और प्रशिक्षण देकर सत्गुणवान बनाओ।
संसाधन दे करके सबका घर-परिवार चलाओ।।
सुखसुविधा समुचित दे करके सब दुःख दूर भगाओ।
संरक्षण दे करके उनका अब सम्मान जगाओ।।
न्यायधर्म अब यह अपनाकर सारा देश चलेगा।
धरती पर सुख-शान्ति का तभी वातावरण बनेगा।।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सब समुचित अधिकारी।
बौद्ध जैन पारसी बहाई होंगे सभी सुखारी।।
शिक्षा रोजी सुखसुविधा संरक्षण सबके हित हो।
न्यायनीति समुचित विधान से जनता अनुशासित हो।।
शेर-भेड़ जब एक घाट पर स्वतः पियेंगे पानी।
जंगल में तब रामराज्य की हो चरितार्थ कहानी।।

❀❀❀